शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

foKfIr

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

rjkiFk dh dUnh; xfrfofèk;k dk lokfèkd ykdfi; lkIrkfgd e[ki=k

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक ८ : नई दिल्ली : २७ मई से २ जून २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी आदि श्रमणी बालोतरा में एक महीने का प्रभावक प्रवास सानंद संपन्न कर समदड़ी पधार गए हैं। पूज्यप्रवर यहां छह दिन प्रवास करेंगे। ३१ मई को यहां दीक्षा महोत्सव का समायोजन है। ६-२७ जून तक पूज्यप्रवर पचपदरा में प्रवास करेंगे। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार २८ जून को चतुर्मास हेतु जसोल पधार जाने की संभावना है।

T;"B d".kk prqnZ'kh d fnu gktjh e
ije J); vkpk;oj dk exy mnckèku

आर्हत वाङ्मय में कहा गया है--**p,Ttng u g èkEe lkl.kA** परिस्थिति विशेष आने पर शरीर भले ही छूट जाए, किन्तु साधक धर्मशासन को और धर्म की साधना को न छोड़े। संघनिष्ठा और शासननिष्ठा इतनी सुदृढ़ हो कि आदमी कुछ कठिनाइयां भले ही भोग ले और मौका आने पर शरीर की भी परवाह न करे, परन्तु धर्मशासन में सुदृढ़ आस्था बनाए रखे। जीवन में अनेक तरह की परिस्थितियां आ सकती हैं, कभी अनुकूलता की तो कभी प्रतिकूलता की, उन परिस्थितियों को आदमी झेलने का प्रयास करे, परन्तु छोटी-मोटी तुच्छ बातों को लेकर अपने संघ और शासन से बाहर पैर रखने का सपने में भी न सोचे।

आज कृष्णा चतुर्दशी है और सामान्यतया आज के दिन 'हाजरी' यानी मर्यादा पत्र का वाचन किया जाता है। पूर्वाचार्यों ने कितनी सुन्दर व्यवस्था बनाई कि बार-बार आचार, मर्यादा और व्यवस्था के विधानों को याद कराते रहो, याद करते रहो। स्मृति ताजा बनी रहती है तो मर्यादाओं के पालन में भी समीचीन सहायता मिलती है। मेरा मानना है कि अतिक्रमण का एक कारण है अज्ञानता। जब आदमी को जानकारी नहीं होती, स्मृति नहीं होती तो वह अनचाहे ही विधि-नियमों का उल्लंघन कर देता है। अज्ञानता के कारण होने वाले अतिक्रमण को रोकने के लिए आवश्यकता है कि आदमी की जानकारी ठीक बनी रहे, स्मृति ठीक बनी रहे, ताकि वह अपनी स्वीकृत व्यवस्था, मर्यादा का सम्यक पालन कर सके। आचार के प्रति भी जागरूक रह सके, विचार के प्रति भी सतर्क रह सके।

हमारे मर्यादा पत्र का प्रथम उद्घोष है--सर्व साधु-साध्वियां पांच महाव्रत, पांच समिति और तीन गुप्ति की अखंड आराधना करें। बस, यह एक वाक्य मानों हमारे गले का हार है, एक बड़ा उपहार है, जीवन का आधार है और साधना का सार है। पांच महाव्रतों के प्रति हमारी जागरूकता, पांच समितियों के प्रति जागरूकता और तीन गुप्तियों की सम्यक आराधना--यह हमारी साधुता है। मर्यादा पत्र का उच्चारण करने से और सुनने से स्मृति ताजा होती है कि ये हमारे नियम हैं। दो बार प्रतिक्रमण करने का विधान है। प्रतिक्रमण करने से लगे हुए दोष की भी स्मृति हो सकती है और उसकी शुद्धि का उपाय भी हो सकता है। जिस किसी ने यह प्रतिक्रमण का विधान किया, बड़ा सुन्दर काम किया है, ऐसा मुझे प्रतीत हो रहा है।

हम साधु-साध्वियां अपनी साधना के प्रति जागरूक रहें। साधना का विकास करने का प्रयास करें। कषायों का मंदीकरण हो, हमारे कषाय शान्त रहें। एक आदमी बेले-बेले, तेले-तेले तपस्या करता है, किन्तु उसका कषाय उग्र है, व्यवहार में सामंजस्य रखने में असमर्थ है, साथ में रहने वाले उससे परेशान हैं तो उसे सोचना चाहिए कि मैं तपस्या करूं, उससे ज्यादा इस बात पर ध्यान दूं कि मेरा कषाय मंद हो जाए।

मेरे कारण किसी के चित्त को असमाधि न हो। कषाय के मंदीकरण का फलित यह होना चाहिए कि हमारे व्यवहार में सहिष्णुता दिखाई दे, व्यवहार में विनम्रता दिखाई दे और हमारा व्यवहार सबके प्रति निश्छल हो और पदार्थ के प्रति ज्यादा आकर्षण न हो, लालसा न हो। आगम का वह सूत्र--पयणु कोह माण माया...। कषाय मंदीकरण का प्रयास करना हमारा फर्ज है। हम यदा-कदा आत्मालोचन करें कि मुझे आवेश आता है या नहीं? आता है तो बार-बार या कभी कभार आता है? मेरे मन में ऐसा कोई विकार है क्या? मैं अग्रणी हूं इस बात का मेरे मन में अहंकार है, मैं वक्ता हूं, इस बात का मेरे मन में अंहकार है या मैं और कुछ हूं, इस बात का मेरे मन में अहंकार है? अगर है तो मैं उसे छोड़ने का प्रयास करूं। मेरे व्यवहार में कभी वंचना तो नहीं होती या मैं बात-बात में ठगी का प्रयास तो नहीं करता हूं या ज्यादा होशियारी छांट कर माया तो नहीं करता हूं, इस बात का चिंतन रहे।

परमपूज्य गुरुदेव तुलसी एक बार अध्यात्म साधना केन्द्र दिल्ली में प्रवास कर रहे थे। एक दिन एक साधु को गुरुदेव ने याद किया। वह साधु आया तो गुरुदेव ने उस साधु से बात की। संभवतः उस साधु से कोई प्रमाद या स्खलना हो गई थी। साधु थोड़ा होशियार था। जहां तक मुझे स्मरण है गुरुदेव ने उससे कहा--'देखो, गुरु के सामने होशियारी नहीं छांटनी चाहिए। मैं जो पूछ रहा हूं, उसका जवाब दो, मेरे सामने होशियारी दिखाने की कोशिश मत करो।' यानी गुरु के सामने छलना का व्यवहार नहीं होना चाहिए। गुरु पूछ रहे हैं और गलती हुई है तो हाथ जोड़कर चरणों में मस्तक रखकर अपनी भूल स्वीकार कर लें और निवेदन करें कि मुझसे यह गलती हो गई है, अब आप उसकी शुद्धि की कृपा कराओ, मेरा शोधन कराओ। यह सरलता है, विनम्रता है। इस प्रकार हम अपने कषायों को प्रतनु बनाने का प्रयास करें। कषाय पतले पड़ेंगे तो मोक्ष निकट हो जाएगा। मोक्ष तो मानों हमारी प्रतीक्षा कर रहा है कि कब आएं, कब आएं। पर वहां जाने के लिए हमें उसकी कुछ शर्तें माननी पड़ेंगी, बाकी मोक्ष तो तैयार है हमारा स्वागत करने के लिए। वह सोच रहा होगा कि भरत क्षेत्र से तो कोई आ ही नहीं रहा है।

हम अपनी साधना को प्रकृष्ट बनाने का प्रयास करें और इसके साथ निर्धारित आचार के प्रति जागरूकता रखें। अहिंसा के प्रति जागरूकता, याथार्थ्य के प्रति जागरूकता, अस्तेय के प्रति जागरूकता। हम अपने नियमों के प्रति जागरूक रहें। कोर लगने (सूर्यास्त होने) से पहले-पहले हमारा पानी का काम समाप्त हो जाए। पांच, दस, पन्द्रह मिनट पहले जितना जल्दी काम संपन्न हो जाए, निवृत्त होकर प्रतिक्रमण की तैयारी करने लगें। गुरु वंदना से पूर्व आकर अपना स्थान ग्रहण कर लें। हमारी दिनचर्या इतनी कसी हो कि कोर लगने से पहले-पहले हम दिवस संबंधी कार्यों से निवृत्त हो जाएं। प्रतिलेखन का शब्द हो गया तो यथासंभव जल्दी से जल्दी प्रतिलेखना करने का प्रयास करना चाहिए। कोर लगने के बाद हमारी प्रतिलेखना चलती रहे, ऐसा ढाळा नहीं होना चाहिए। काले कालं समायरे, यानी समय पर अपना काम संपन्न करने का रुझान रहे, ऐसी हमारी आदत पड़ जानी चाहिए।

महामना परमपूज्य आचार्य भिक्षु ने अनुकंपा का विचार दिया, धर्म का विचार दिया। उन्होंने कहा--'असंयती के जीने की वांछा करना राग और मरने की वांछा करना द्वेष तथा संसार समुद्र से उसके तरने की वांछा करना वीतराग देव का धर्म है।' एक राग है, एक द्वेष है और एक धर्म है। किसी को राग-द्वेष मुक्त करने का प्रयास करना धर्म है।

हमारा संगठन है तो संगठन की अपनी मर्यादाएं भी हैं। एक तो आचार संबंधी मर्यादाएं या व्यवस्थाएं हैं और दूसरी हमारी संगठन की मर्यादाएं या व्यवस्थाएं हैं। संगठन की मर्यादाएं और व्यवस्थाएं संगठन की सुरक्षा के लिए हैं। संगठन की मर्यादाएं हमारी साधना में सहायक भी बनती हैं। संगठन की मर्यादाओं की सिरमौर मर्यादा कोई है तो यह कि सर्व साधु-साध्वियां एक आचार्य की आज्ञा में रहें। एक आचार्य की आज्ञा में सभी साधु-साध्वियां चलें। आज्ञा के प्रति जागरूक रहें, इंगित के प्रति जागरूक रहें। गुरुकुलवास

के साधु-साध्वियां रहते हैं और बहिर्विहार में भी साधु-साध्वियां रहते हैं। गुरुकुलवास में रहना भी अच्छा है और आज्ञा से बहिर्विहार में रहना भी अच्छा है। आज्ञा की आराधना न करें तो न यहां रहना अच्छी बात है, न न्यारा में जाना अच्छी बात। सबसे बड़ी बात है आज्ञा में रहना। जिस शिष्य के मन में गुरु के प्रति भक्ति नहीं है, बहुमान नहीं है, स्नेह नहीं है, श्रद्धा नहीं है, सेवा की भावना नहीं है, ऐसे साधु का गुरुकुलवास में भी रहने में क्या लाभ? गुरु के प्रति श्रद्धा-भक्ति, स्नेह, वात्सल्य सम्मान और सेवा की भावना है तो गुरुकुलवास में रहना सार्थक है। लेकिन सबसे बड़ी बात है शासन की सेवा करना। गुरुकुलवास में रहें या बहिर्विहार में, लक्ष्य शासन की सेवा का रहे। गुरुकुलवास में रहना मैं इतनी बड़ी बात नहीं मानता और न्यारा में जाना भी इतनी बड़ी बात नहीं मानता, जितनी शासन की सेवा करने को मानता हूं। शासनपति का जो इंगित हो, उसके अनुसार सेवा करना बड़ी बात है।

अपने मन से सेवा करना अच्छी बात है, पर शासनपति जिस सेवा के लिए इंगित करें, उस सेवा के लिए समर्पित हो जाना और भी बड़ी बात है। शासनपति को अमुक काम के लिए तुम्हारी अपेक्षा है और तुम कोई और काम करना चाहते हो तो यह विचारणीय बात है। शासनपति तुम्हारी शक्ति का नियोजन जहां करना चाहते हैं, तुम वहां उस काम के लिए समर्पित रहो, यह शासन की बड़ी सेवा होगी। शासन के नियंता तो शासनपति हैं। शासन को कहां, कब, किसकी अपेक्षा है, इसकी सबसे ज्यादा जानकारी शासनपति को हो सकती है, इसलिए शासनपति की जो दृष्टि हो, उसके अनुसार चलना चाहिए। दीक्षा के महीने भर बाद या तत्काल बाद भी गुरु बहिर्विहार में भेजें तो इस बात का संतोष होना चाहिए कि शासन के काम के लिए गुरु इंगित के अनुसार बाहर जा रहा हूं। यह भी मेरे लिए श्रेयस्कर है, कल्याणकारी है, मन में ऐसा भाव रहे। इस प्रकार सबसे बड़ी कसौटी है कि शासनपति के इंगित, दृष्टि, आज्ञा की आराधना के प्रति अपनी निष्ठा बनाए रखना।

व्यवहार की दुनिया में शासन सबसे बड़ा है, उससे बड़ा कोई नहीं। मुझसे कोई यह पूछे कि एक ओर गणी और दूसरी ओर शासन है, दोनों में बड़ा कौन? तुलना की दृष्टि से मैं कहना चाहूंगा कि गणी की अपेक्षा शासन बड़ा है। क्योंकि गणी भी तो शासन में ही हैं। मैं तो यह सोचता हूं कि गणी भी शासन की शरण में हैं। शासन सबका छत्र है, त्राण है, शरणदाता है, इसलिए शासन से बड़ा कोई नहीं। हम शासन की सेवा करें, शासन का हित हो, वैसा कार्य करें। परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी मंत्री मुनि मगनलालजी स्वामी के बारे में फरमाते कि मगनलालजी स्वामी के लिए शासन का हित सर्वोपरि था। शासन का हित कैसे हो, इस पर वे ध्यान देते थे। हमारे में भी यह निष्ठा रहे। हम आज्ञा के प्रति सदा समर्पित रहें, जागरूक रहें और आज्ञा को सम्मान दें, बहुमान दें। गुरु की आज्ञा कभी मन के अनुकूल हो, कभी अनुकूल न भी हो, दोनों स्थितियां हो सकती हैं। अनुकूल हो तो ठीक, न हो तो भी ठीक। पर आज्ञा है, इंगित है, निर्देश है, इसलिए शिष्य का धर्म है अपने मन की भावना को गुरु चरणों में अर्पित कर दे और जो गुरु का इंगित है, उसे क्रियान्वित करने का प्रयास करे।

आप देखें कि हमारे साधु-साध्वियां आचार्य की एक आज्ञा के आधार पर कहां से कहां चले जाते हैं? उन्हें राजस्थान से कोलकाता भेज दें, नेपाल भेज दें, मुम्बई भेज दें, दक्षिण भेज दें, कहीं भी भेज दें, एक आज्ञा का बल अपने साथ लेकर वे कहां-कहां चले जाते हैं। उनके मन में आज्ञा के प्रति कितनी निष्ठा है। अपनी इच्छा को गौण कर गुरु-इच्छा को वे कितना बहुमान देते हैं। हालांकि इस संदर्भ में और भी ज्यादा विकास होना चाहिए। गुरु का निर्णय मन के अनुकूल हो अथवा न हो, किन्तु जो निर्णय हो गया, हम उसके प्रति सम्मान का भाव रखें। विशेष अपेक्षा हो तो निवेदन किया जा सकता है। लेकिन अन्ततः जो निर्णय रहे, उसकी क्रियान्विति करने का प्रयास करना चाहिए।

संगठन की मर्यादा है--विहार, चतुर्मास आदि आचार्य की आज्ञा से करें। किस साधु-साध्वी को किधर

विहार करना, कहां चतुर्मास करना, अपने मन के अनुसार नहीं, गुरु की आज्ञा से करना बड़ी बात है। गुरु का जहां के लिए इंगित हो, निर्देश हो, उधर के लिए विहार करना, आचार्यों के निर्देश के अनुसार चतुर्मास करना बड़ी बात है।

तीसरी मर्यादा--कोई साधु-साध्वी अपना शिष्य-शिष्या न बनाए। शिष्य-शिष्याएं सब एक आचार्य के हैं, एक गुरु के हैं और हमारे धर्मसंघ में तो कुछ ऐसी व्यवस्था बन गई और कुछ ऐसे संस्कार जम गए कि दीक्षा देना भी हो तो गुरु के नाम से देना। दीक्षा तो गुरु की आज्ञा से, गुरु के नाम से कोई भी दे, किन्तु शिष्य तो आचार्य का ही होगा। आचार्यों को शिक्षा दी गई कि कोई दीक्षा देकर लाए तो उसे अपने पास रख लो, इच्छा हो तो वापिस दे दो, लेकिन एक बार तो अपने पास ले लेना चाहिए, ऐसी आचार्यों को शिक्षा दी गई है।

दीक्षित किसे किया जाए? जो योग्य हो, उसको ही दीक्षित किया जाए। आचार्य किसी को दीक्षा दें तो योग्यायोग्य की कसौटी के बाद ही दें। योग्य है या नहीं, यह पहले देखें। योग्य लगे तो दीक्षित करें और दुर्भाग्य से कोई अयोग्य दीक्षित हो जाए और अयोग्यता प्रखर हो जाए तो उसे यथौचित्य संघ से मुक्त करने में भी संकोच नहीं करना चाहिए।

पांचवीं मर्यादा है आचार्य अपने गुरुभाई या शिष्य को अपना उत्तराधिकारी चुनें, उसे सब साधु-साध्वियां सहर्ष स्वीकार करें। आचार्य चाहें तो दीक्षा में अपने से बड़े को भी अपना उत्तराधिकार सौंप सकते हैं और चाहें तो अपने से अवमरात्निक को भी गण का भार सौंप सकते हैं। जिसको भी आचार्य अपना भार सौंपें, उसे सभी साधु-साध्वियां सहर्ष स्वीकार करें। ये हमारे तेरापंथ शासन की पांच मौलिक मर्यादाएं हैं और इतनी मजबूत मर्यादाएं हैं, मानों शासन की स्तंभ हैं और मैं तो सोचता हूं कि इन मर्यादाओं के स्तंभों के आधार पर ही हमारा शासन टिका हुआ है। स्तंभ जितने मजबूत रहेंगे, शासन का प्रासाद अच्छी तरह मजबूती से टिका रह सकेगा। इन्हें मजबूत रखने का हमें प्रयास भी रखना चाहिए।

हम जिस शासन में रह रहे हैं, साधना कर रहे हैं, उस शासन की सेवा जितनी हमारे से हो सके, हमें करनी चाहिए। हमारा शरीर हमारा मन, हमारी वाणी शासन की सेवा में लगे। जिस शासन ने हमको इतना दिया है, जिस शासन से हमने इतना लिया है और ले रहे हैं, हम उस शासन के लिए जो कर सकें, करना चाहिए। शासनपति का जैसा इंगित हो, आदेश हो, उसके आधार पर हम शासन की सेवा करने का प्रयास करें। यह हमारे दिलो-दिमाग में भावना रहनी चाहिए कि शासन की हल्की न लगे, बल्कि हमारे कार्यों के द्वारा शासन की प्रभावना हो, हमें शासन की सेवा करने का मौका मिले, कर्मनिर्जरा का अवसर मिले और साथ में शासन की सेवा भी हमारे शरीर के द्वारा हो जाए, हमारी शक्ति का अच्छा उपयोग हो जाए।

संगठन की सुदृढ़ता बनी रहे, इसके लिए अपेक्षा है कि साधु-साध्वियों में दलबंदी नहीं होनी चाहिए। हम पांच एक, हम दस एक--ऐसे दलबंदी न हो। हम सब भिक्षु शासन के हैं, हम सब गणी के हैं, हम सब गण के हैं, यह भावना रहे। दलबंदी कभी संघ में नहीं होनी चाहिए और दलबंदी शासन की एकता और अखंडता के लिए अनुकूल नहीं होती। इसलिए दलबंदी को कहीं महत्त्व नहीं मिलना चाहिए।

हम अपने संघ की मर्यादाओं के प्रति जागरूकता बनाए रखने का प्रयास करें और जितनी हमारी जागरूकता रहेगी, उतना हम शासन को आगे बढ़ा सकेंगे, शासन को सुरक्षित रखने में अपना योगदान भी दे सकेंगे।"

•

ije J); vkpk;Jh egkJe.k ckykrjk e

i;Ru'khy jg ckfek ikfIr d fy,

f^ ebA परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातःकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत मंगल प्रवचन में बारहवीं बोधि दुर्लभ भावना की विवेचना करते हुए कहा--'प्राणी अनादिकाल से संसार में परिभ्रमण कर रहा है। वह ऐसी-ऐसी गतियों में चला जाता है अथवा रहता है, जहां बोधि प्राप्त करना बहुत दुर्लभ होता है। कितने-कितने जीव निगोद में रहते हैं, अव्यवहार राशि में रहते हैं, उन्हें बोधि प्राप्त नहीं होती। निगोद से निकलने पर भी स्थावर जीवों को बोधि की प्राप्ति नहीं होती और सभी पंचेन्द्रिय प्राणी भी बोधि प्राप्त नहीं कर सकते। एकमात्र मनुष्य जीवन ऐसा है, जहां संपूर्ण बोधि की प्राप्ति संभव है। किन्तु मनुष्य जीवन भी दुर्लभ है। वह हर किसी को प्राप्त नहीं होता। एक बार मनुष्य जीवन मिला और यदि उसे पापो में खो दिया तो पुनः मनुष्य जीवन कब मिलेगा, कुछ कहा नहीं जा सकता। सामान्यतया जब मनुष्य जीवन ही दुर्लभ है तो बोधि प्राप्ति तो और भी दुर्लभ होती है।

पूज्यप्रवर ने आगे कहा--'जिन्हें मनुष्य जीवन प्राप्त है, उन्हें सोचना चाहिए कि हमें सम्यक्त्व प्राप्त है या नहीं? हमने नवतत्त्वों को समझा है या नहीं? हमने गुरुधारणा की अथवा नहीं? अठारह पापों से बचने का प्रयास किया या नहीं? बोधि के तीन प्रकार हैं--सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र। यह रत्नत्रयी अपने आप में संपूर्ण बोधि होती है। सम्यक् दर्शन अर्थात् सम्यक् श्रद्धा के बिना सम्यक् ज्ञान नहीं हो सकता और उसके बिना सम्यक् चारित्र नहीं हो सकता। श्रावक यह भावना करे कि वह दिन धन्य होगा, जिस दिन मैं चरणबोधि अर्थात् अनगारत्व को स्वीकार करूंगा। सबके लिए साधु बनना संभव नहीं होता, किन्तु यदि एक बार अच्छी तरह श्रावकत्व का पालन कर लिया तो किसी अन्य जन्म में साधुत्व को स्वीकार करने का मौका अवश्य मिलेगा।'

संस्कार निर्माण शिविर को बोधि प्राप्ति में सहयोगी बताते हुए आचार्यवर ने कहा--'संस्कार निर्माण शिविर अभी चल रहा है। सैकड़ों बालक-बालिकाओं को एक प्रकार से बोधि की दिशा में गति करने का मौका मिला है। कम्प्यूटर, टेलिविजन, मोबाइल फोन आदि भौतिक उपकरणों के आसपास रहने वाले बच्चों को तत्त्व को समझने, जानने और धर्म के आसपास रहने का सुन्दर अवसर मिला है। गर्मी की छुट्टियों में क्षेत्रीय स्तर पर ऐसा उपक्रम चले तो कितने-कितने बच्चे लाभान्वित हो सकेंगे। ऐसा अवसर मिलना अपने आप में विशेष बात है। बच्चे शिविर में भाग लेते हैं तो उन्हें धार्मिक प्रशिक्षण मिलता है। धर्म का प्रशिक्षण मिलेगा तो उनमें संस्कार भी अच्छे आ सकेंगे और वे अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए अधिक उपयोगी बन सकेंगे, अपनी आत्मा के लिए भी अच्छे बन सकेंगे।'

आज मध्याह्न में मूर्तिपूजक आम्नाय के आचार्य हिमाचलसूरीश्वरजी की शिष्या साध्वी उपेन्द्रयशाजी आदि साध्वियां पूज्यप्रवर की सन्निधि में उपस्थित हुईं और परमपूज्य आचार्यप्रवर ने उनसे विभिन्न विषयों पर वार्तालाप किया।

vfu"V dju okyk d ifr Hkh jg e=kh Hkko

f‰ ebA परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर आज प्रातः संस्कार निर्माण शिविर के शिविरार्थियों के आवास स्थल डूंगर भवन, बाबू स्मृति भवन एवं हनुमंत सराय में पधारे। पूज्यप्रवर को कार्यकर्ताओं ने व्यवस्था आदि के विषय में अवगत कराया, तत्पश्चात् डागा हॉस्पिटल भी आचार्यवर के पादाम्बुज से पावन बना।

पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आचार्यप्रवर माहेश्वरी भवन में भी पधारे। माहेश्वरी समाज के सैकड़ों लोगों ने आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। श्री रमेश टावरी ने आचार्यवर के स्वागत में अपने भावपूर्ण विचार रखे।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में बड़ी संख्या में उपस्थित माहेश्वरी समाज के लोगों को अहिंसा यात्रा के उद्‌देश्यों की अवगति देते हुए अनुकंपा की चेतना के विकास की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर की प्रेरणा से अनेक व्यक्तियों ने तम्बाकू छोड़ने का संकल्प भी व्यक्त किया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में परमपूज्य आचार्यप्रवर ने भावनाधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'सोलह भावनाओं में तेरहवीं भावना है--मैत्री। प्राणिमात्र के प्रति मैत्री का भाव रहे। जो हमारा बुरा करते हैं, उनके प्रति भी हमारे मन में मंगल मैत्री का भाव रहना चाहिए। व्यक्ति परिवार, समाज और समूह में जीता है तो परस्पर में कभी मनमुटाव की स्थिति भी हो सकती है। लेकिन कभी कोई ऐसी स्थिति आए तो परस्पर क्षमायाचना अवश्य कर लेनी चाहिए। यदि कोई वर्ष भर तक कटुता व वैर की गांठ को नहीं खोलता तो उसके सम्यक्त्व पर प्रश्न खड़ा हो जाता है। यदि भीतर में त्याग, उदारता और अनाग्रह है तो पारस्परिक संबंधों में मधुरता बनी रह सकती है। आवश्यकता है सबके साथ हमारी मंगल मैत्री रहे। हम अपने जीवन को मैत्री की भावना से भावित करते रहें।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर के प्रवचन से पूर्व मंत्री मुनिश्री का प्रेरणादायी वक्तव्य हुआ। मुनि राजकुमारजी ने गीत का संगान किया। आज मध्याह्न में बालोतरा तेरापंथी सभा को पूज्यवर की उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। इस दौरान पूज्यप्रवर ने सभा की गतिविधियों की अवगति प्राप्त करते हुए कार्यकर्ताओं को पावन संबोध प्रदान किया।

dkjkxg e ikou ikFk;

fŠ ebA परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर आज प्रातः बालोतरा के उपकारागृह में पधारे। वहां उपखंड अधिकारी श्री कमलेश आबूसरिया, जेलर श्री चिमनाराम, उप जिला पुलिस अधीक्षक श्री रामेश्वर मेघवाल आदि ने पूज्यवर का भावभीना स्वागत किया।

कैदियों को संबोधित करते हुए आचार्यवर ने उन्हें अपराध से दूर रहने तथा सद्‌गुणों को आत्मसात् करने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यवर की पावन प्रेरणा से अनेक कैदियों ने नशामुक्त रहने का संकल्प स्वीकार किया। कारागृह से प्रस्थान कर आचार्यवर उप जिला पुलिस अधीक्षक के कार्यालय में पधारे। श्री रामेश्वर मेघवाल ने अपने कार्यालय में पूज्यप्रवर का आस्थासिक्त स्वागत किया। यहां कुछ क्षण विराज कर मंगलपाठ सुनाने के उपरान्त पूज्य आचार्यवर पुनः प्रवास स्थल की ओर प्रस्थित हो गए।

jk"Vªh; lLdkj fuekZ.k f'kfoj dk lekiu

आज का प्रातःकालीन कार्यक्रम जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा आयोजित अष्टदिवसीय संस्कार निर्माण शिविर के समापन समारोह के रूप में समायोजित हुआ। कार्यक्रम के प्रारंभ में शिविरार्थी बालकों ने मंगल संगान प्रस्तुत किया। आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री देवराज खींवसरा ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। महासभा के सहमंत्री तथा शिविर संयोजक श्री भूपेन्द्रकुमार मूथा ने शिविर के संबंध में अभिव्यक्ति देते हुए पूज्यचरणों में अपने कृतज्ञ भावों को अर्पित किया तथा 'श्रेष्ठ शिविरार्थी' और 'अनुशासित शिविरार्थी' छात्र-छात्राओं के नामों की घोषणा की। शिविर की छात्राओं ने गीत के माध्यम से अपने अनुभवों को प्रस्तुति दी। श्रेष्ठ शिविरार्थी संदीप जैन (कोलकाता) ने अपने अनुभव प्रस्तुत किए। मुनि जितेन्द्रकुमारजी एवं साध्वी संगीतप्रभाजी ने इस संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए। मुनि राजकुमारजी ने गीत का संगान किया।

मंत्री मुनिश्री ने अपने प्रेरक वक्तव्य में कहा--'छात्र-छात्राओं के लिए शिविर बहुत उपयोगी है। इस दौरान उन्हें विविध प्रकार का सघन प्रशिक्षण दिया जाता है। छात्र-छात्राओं ने शिविर में जो कुछ प्राप्त किया, वे उसका विस्तार करते रहें। यहां से प्राप्त संस्कारों का प्रभाव आपके जीवन में झलकता रहे तथा

शिविर के प्रति यह आकर्षण और ज्यादा बढ़ता रहे।'

परम पावन आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'धर्म एक द्वीप है, प्रतिष्ठा है, शरण है, गति कराने वाला तथा आधार देने वाला है। जिस व्यक्ति के जीवन में धर्म के संस्कार अवतरित हो जाते हैं, उसे बहुत बड़ी संपदा प्राप्त हो जाती है। बालपीढ़ी में सत्संस्कारों का निर्माण बहुत महत्त्वपूर्ण है। सुसंस्कार जीवन की अमूल्य निधि है।'

पूज्यवर ने आगे कहा--'आठ दिन का शिविर लगा। गर्मी में इतनी दूर-दूर से बच्चे उत्साह के साथ आए, यह विशेष बात है। शिविर की संयोजना में साधु-साध्वियों और कार्यकर्ताओं का पुरुषार्थ निहित है। अपने आध्यात्मिक परिश्रम के लिए वे सभी साधुवाद के पात्र हैं। इतनी बड़ी संख्या में आए बच्चों को संभालना बड़े धैर्य का कार्य होता है। ऐसे शिविरों का समय-समय पर आयोजन होता रहे, ऐसा प्रयास रहना चाहिए, क्योंकि इसके माध्यम से बालपीढ़ी को संस्कार प्राप्त करने का एक सुन्दर अवसर प्राप्त होता है। संस्कारी बच्चे परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा संचालित यह गतिविधि बहुत उपयोगी प्रतीत हो रही है। शिविर के प्रति बच्चों में जो आध्यात्मिक उत्साह है, वह प्रवर्धमान रहे।' प्रवचन के पश्चात् आचार्यवर ने शिविरार्थियों को गुरुधारणा करवाई। कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया।

इस अष्टदिवसीय शिविर में देश भर से ५८१ छात्र-छात्राएं संभागी बने। परम श्रद्धेय आचार्यवर ने प्रायः प्रतिदिन शिविरार्थियों को पावन पाथेय प्रदान किया। एक दिन कक्षा के समय किसी अन्य कार्यक्रम में सन्निधि प्रदान करने पर पूज्यवर ने अनुग्रह कर दूसरे दिन शिविरार्थियों को दुगुना समय प्रदान किया। अपने मंगल पाथेय में पूज्यवर ने संभागियों को नमस्कार महामंत्र से संबद्ध जानकारियां प्रदान कीं तो प्रश्नोत्तर शैली में पचीस बोल पर आधारित तत्त्वचर्चा भी की। पूज्यप्रवर ने सत्य पर अडिग रहने व नकल न करने की प्रेरणा प्रदान की तो अनेक शिविरार्थियों ने असत्य और नकल से दूर रहने का संकल्प स्वीकार किया। पूज्यवर के आह्वान पर अनेक शिविरार्थियों ने दीक्षार्थी के रूप में भी अपने आपको प्रस्तुत किया। इन सबके अतिरिक्त भी विविध विषयों पर पूज्यवर का पावन संबोध शिविरार्थियों के जीवन की अविस्मरणीय थाती बन गया।

शिविरार्थी छात्रों के प्रशिक्षण में मुनि जितेन्द्रकुमारजी तथा छात्राओं के प्रशिक्षण में साध्वी अनुशासनाश्रीजी और साध्वी संगीतप्रभाजी का निष्ठापूर्ण श्रम शिविर की सफलता में सहायक रहा।

इस शिविर में मंत्री मुनिश्री, शासनश्री मुनि किशनलालजी, मुनि विजयकुमारजी, मुनि उदितकुमारजी, मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि जिनेशकुमारजी, मुनि हिमांशुकुमारजी, मुनि रजनीशकुमारजी, मुनि नीरजकुमारजी, मुनि योगेशकुमारजी, मुनि पुलकितकुमारजी, मुनि कीर्तिकुमारजी, मुनि परमानंदजी, मुनि विनीतकुमारजी, मुनि अनंतकुमारजी, मुनि धन्यकुमारजी, मुनि महावीरकुमारजी, मुनि अभिजितकुमारजी, मुनि मृदुकुमारजी, मुनि गौरवकुमारजी, श्री राकेश खटेड़ (चेन्नई), श्री विक्रम सेठिया (कोलकाता), श्री डालम सेठिया (बेंगलुरु) ने शिविरार्थी छात्रों को प्रशिक्षण प्रदान किया।

शिविरार्थी बालिकाओं को महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मुख्यनियोजिकाजी के पुनीत मार्गदर्शन के अतिरिक्त साध्वी आरोग्यश्रीजी, साध्वी योगप्रभाजी, साध्वी सुनन्दाश्रीजी, साध्वी वंदनाश्रीजी, साध्वी निर्मलप्रभाजी, साध्वी अर्चनाश्रीजी, साध्वी तन्मयप्रभाजी, साध्वी अतुलयशाजी, साध्वी महिमाश्रीजी, साध्वी तरुणयशाजी, साध्वी लक्ष्यप्रभाजी, साध्वी सुमंगलप्रभाजी, साध्वी नन्दिताश्रीजी, साध्वी मनोज्ञयशाजी, साध्वी मार्दवयशाजी, साध्वी केवलप्रभाजी, साध्वी चारित्रयशाजी, समणी निर्मलप्रज्ञाजी, समणी प्रसन्नप्रज्ञाजी, समणी श्रद्धाप्रज्ञाजी, समणी ज्ञानप्रज्ञाजी, समणी प्रशान्तप्रज्ञाजी, समणी सौम्यप्रज्ञाजी, समणी शुक्लप्रज्ञाजी, समणी विशदप्रज्ञाजी, समणी विनयप्रज्ञाजी से प्रशिक्षण प्राप्त हुआ।

शिविर की व्यवस्थाओं में तेरापंथी महासभा तथा आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति बालोतरा के कार्यकर्ताओं व विभिन्न क्षेत्रों से शिविरार्थियों के साथ समागत प्रशिक्षकों का श्रम उल्लेखनीय है। प्रवास व्यवस्था समिति बालोतरा तथा श्री हंसराज नरपतसिंह सुनीलकुमार चोरड़िया (सुजानगढ़-बेंगलुरु) इस शिविर के प्रायोजक रहे।

आज मध्याह्न में तेरापंथ युवक परिषद बालोतरा को पूज्यवर की उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। इस दौरान पूज्यप्रवर ने गतिविधियों की अवगति प्राप्त कर युवकों को पावन पाथेय प्रदान किया। रात्रि में तेरापंथ महिला मंडल बालोतरा द्वारा प्रतिक्रमण पर आधारित क्विज प्रतियोगिता समायोजित हुई। पांच राउण्ड में चली इस प्रतियोगिता में सिवांची-मालानी क्षेत्र की तीस महिलाएं संभागी बनीं। प्रतियोगिता से पूर्व ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने विभिन्न प्रस्तुतियां दीं।

***f< eb*A** आज पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में अभातेयुप के तत्त्वावधान में त्रिदिवसीय तेरापंथ किशोर मंडल के अधिवेशन का शुभारंभ हुआ। शुभारंभ सत्र में किशोरों को पूज्यवर का मंगल पाथेय प्राप्त हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में परमपूज्य आचार्यप्रवर ने 'हाजरी' का वाचन करते हुए चतुर्विध धर्मसंघ को पावन प्रेरणा प्रदान की। पूज्यवर का वह मंगल उद्बोधन इसी विज्ञप्ति के प्रारंभ में प्रकाशित है। मुनि मृदुकुमारजी एवं मुनि शुभंकरजी द्वारा लेखपत्र के उच्चारण के पश्चात् मुनिवृन्द ने पंक्तिबद्ध खड़े होकर तथा साध्वीवृन्द ने अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया। हाजरी वाचन के पश्चात् पूज्यवर ने बीदासर समाधिकेन्द्र में समाधिमरण को प्राप्त साध्वी लक्ष्मीवतीजी (सर.) का संक्षिप्त जीवन परिचय प्रस्तुत करते हुए चतुर्विध धर्मसंघ के साथ चार लोगस्स का ध्यान किया।

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक उद्बोधन भी हुआ। मुनि राजकुमारजी ने गीत का संगान किया। बीदासर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री संपतमलजी बैद ने अपने विचार व्यक्त किए। श्री बाबूलाल ढेलड़िया की चौबीस की तपस्या के उपलक्ष्य में श्री महावीर ढेलड़िया ने भावाभिव्यक्ति दी तथा परिजनों ने गीत का संगान किया। श्री बाबूलाल ढेलड़िया ने विचाराभिव्यक्ति के उपरान्त अपनी तपस्या को बढ़ाकर पूज्यवर से बत्तीस का प्रत्याख्यान किया।

vkt d dk;Øe e iT; vkpk;ioj u 'kkluJh efu ikueyh dk prekl ipinjk] 'kkluJh efu fd'kuykyh dk prekl ckykrjk ,o efu g"kykyh ¼ykNMk½ dk prekl ckMesj ?kkf"kr fd;kA

फ्लोरिडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी मियामी (अमेरिका) में लगभग नौ माह तक अध्यापन कार्य कर लौटी समणी चैतन्यप्रज्ञाजी, समणी उन्नतप्रज्ञाजी तथा अध्ययन में संलग्न मुमुक्षु शीतल ने कल पूज्यवर के दर्शन किए। कार्यक्रम में समणी चैतन्यप्रज्ञाजी ने अपने अनुभवों को प्रस्तुति दी।

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने इस प्रसंग में कहा--'समणी चैतन्यप्रज्ञाजी, समणी उन्नतप्रज्ञाजी और मुमुक्षु शीतल अमेरिका की सोद्देश्य यात्रा कर आई हैं। वहां जैन विद्या के अध्यापन और प्रसार का जो कार्य हो रहा है, उसमें इनका भी योगदान है। ये अपना अध्ययन और सघन बनाते हुए जैनिज्म के प्रचार में अपना पुनीत योगदान देती रहें।'

nk lEeyu dk lek;ktu

परमपूज्य आचार्यवर की सन्निधि में आज मध्याह्न में दो सम्मेलनों का समायोजन हुआ। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा 'हमारा राष्ट्र : हमारा दायित्व' विषय पर प्रबुद्ध वर्ग का सम्मेलन समायोजित हुआ। संभागियों को संबोधित करते हुए परमपूज्य आचार्यवर ने अहिंसा, नैतिकता, संयम आदि को हृदयंगम करने की प्रेरणा प्रदान की। सम्मेलन में आगम मनीषी मुनि महेन्द्रकुमारजी और टी.पी.एफ. के प्रभारी मुनि रजनीशकुमारजी के भी वक्तव्य हुए। मुनि राजकुमारजी ने गीत का संगान किया। इस सम्मेलन में कई वरिष्ठ प्रोफेशनल्स भी संभागी बने।

तेरापंथ महिला मंडल बालोतरा द्वारा कन्या व्यक्तित्व विकास विमर्श संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इस संगोष्ठी में लगभग छह सौ कन्याएं संभागी बनीं। परमपूज्य आचार्यवर ने संभागी कन्याओं को पावन संबोध प्रदान किया। श्री राजेश खींवसरा और डा.महावीर गोलेच्छा ने संभागियों को प्रशिक्षण दिया।

आज रात्रि में अभातेयुप द्वारा तेरापंथ किशोर मंडल अधिवेशन के अंतर्गत आर्य वीर दल मैदान में भक्ति संगीत संध्या समायेजित हुई, जिसमें श्रद्धानिष्ठ संगायक श्री कमल सेठिया ने संघीय भावनाओं से ओतप्रोत गीतों को प्रस्तुति दी।

ldYi e ifj.kr gk ^LoLFk Hkkjr % In< Hkkjr* dk liuk

„„ ebA किशोर मंडल अधिवेशन का दूसरा दिन। प्रातःकालीन कार्यक्रम में अभातेयुप के अध्यक्ष श्री संजय खटेड़ ने परिषद की विभिन्न प्रवृत्तियों की विशद अवगति देते हुए किशोरों का स्वागत किया। जसोल ठिकाने के रावल पूर्व आई.ए.एस.अधिकारी श्री किशनसिंहजी ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। स्थानीय नगरपालिका के चेयरमैन श्री महेश बी. चौहान ने अपने वक्तव्य में बालोतरा के एकमासिक प्रवास के प्रभावों की चर्चा की। किशोर मण्डल के सदस्यों के साथ श्रद्धानिष्ठ संगायक श्री कमल सेठिया ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। अहमदाबाद किशोर मंडल की रिपोर्ट 'उड़ान' श्री अभिषेक बुरड़ व अन्य ने भेंट की। लुधियाना की एक निर्देशिका श्री अभय सिंघी एवं श्री प्रदीप दूगड़ ने पूज्यवर को उपहृत की। श्री संजय खटेड़, किशोर मंडल प्रभारी श्री अनिल सांखला, सहप्रभारी श्री नवीन बागरेचा व अन्य पदाधिकारियों ने अधिवेशन की किट भेंट की।

आगम मनीषी प्रो. मुनि महेन्द्रकुमारजी ने जीवन प्रबन्धन की महत्ता उजागर करते हुए कहा--'किशोरों में उमंग और उत्साह है। उनमें श्रद्धाबल भी है। श्रद्धा को मात्र सही दिशा देने की जरूरत है।' मुनिश्री ने जैविभा यूनिवर्सिटी की शैक्षणिक गतिविधियों की जानकारी दी। श्री घेवरचन्द मेहता ने यूनिवर्सिटी की सम्पर्क कक्षाओं की अवगति दी।

मंत्री मुनिश्री ने अपने प्रेरक वक्तव्य में कहा--'किशोर अवस्था चलने की नहीं, दौड़ने की अवस्था है। इस उम्र में इतनी दौड़ लगाएं कि मंजिल पर समय से पूर्व पहुंच जाएं। अपेक्षा है संकल्प बल को मजबूत बनाने की। इससे जीवन में सफलता प्राप्त हो सकती है। किशोर हर दृष्टि से स्वस्थ और सुदृढ़ होगा तो देश भी स्वस्थ व सुदृढ़ होगा।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'उठ गए हो तो अब प्रमाद मत करो। जीवन में ऐसे क्षण भी आते हैं, जब व्यक्ति जाग जाता है, किन्तु बाद में वह पुनः सो जाता है। देश को स्वस्थ एवं सुदृढ़ होने के लिए जागना आवश्यक है और जागने के बाद जागरूक रहना जरूरी है। किशोर मंडल अधिवेशन की यह सुन्दर थीम है--'हेल्दी इंडिया : स्ट्रांग इंडिया।' कोरे सपने न लें। मात्र सपने लेने से कार्य पूर्ण होना कठिन है। सपनों को पूरा करने के लिए संकल्पबद्ध बने तो क्रियान्विति हो सकती है।'

'स्वस्थ भारत, सुदृढ़ भारत' की परिकल्पना को सम्यक् बताते हुए पूज्य आचार्यवर ने कहा--'यह स्वप्न संकल्प में परिणत हो जाए और इसके साथ पुरुषार्थ जुड़ जाए तो लक्ष्य को आंशिक या समग्रतया पाया जा सकता है। किशोर मंडल अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के साथ पल्लवित-पुष्पित होने वाला संगठन है। किशोरों के सामने संभावित लम्बा भविष्य होता है। हेल्दी इंडिया स्ट्रांग इंडिया के लिए आवश्यक है कि भारत के नागरिकों में ईमानदारी के प्रति आस्था हो।'

किशोरों को स्वस्थ भारत और सुदृढ़ भारत का आधार बताते हुए एवं कुछ स्वर्णिम सूत्र प्रदान करते हुए पूज्यवर ने कहा--'किशोर संकल्प बल के साथ आगे बढ़ें। उनका यह संकल्प मजबूत बने कि जीवन में कभी किसी भी स्थिति में बेईमानी और अनैतिकता का आचरण नहीं करेंगे। दूसरा सूत्र है--किशोर नशे की गिरफ्त में न जाएं। वे नशामुक्त बने रहें। नशा शरीर, मन व आत्मा को नुकसान पहुंचाता है। स्वस्थ

भारत के लिए तीसरा सूत्र है--देशभक्ति की उत्कट भावना। राष्ट्रहित को गौण करना स्वस्थ भारत का लक्षण नहीं है। राष्ट्र का अहित न हो व राष्ट्रीय हित प्रमुख रहे। अपना दल या पार्टी नम्बर दो पर रहे, इस चेतना का जागरण होने से सुदृढ़ भारत की परिकल्पना साकार हो सकती है।

चौथा सूत्र है--कर्तव्यनिष्ठा। भारत लोकतांत्रिक देश है। यह प्रक्रिया कर्तव्यनिष्ठा से सफल बनी रह सकती है। पांचवां सूत्र है--अनुशासन। पूज्य गुरुदेव तुलसी द्वारा प्रदत्त 'निज पर शासन : फिर अनुशासन' सूत्र इस संदर्भ में मननीय है।'

अलौकिक विद्या के महत्त्व को रेखांकित करते हुए आचार्यवर ने कहा--'किशोरों में भूगोल, खगोल, गणित आदि की भौतिक शिक्षा को इग्नोर तो नहीं कर सकते, पर इसके साथ अलौकिक विद्या का शिक्षण और प्रशिक्षण भी मिले। सुदृढ़ भारत हेतु देश का भौतिक एवं आर्थिक विकास जरूरी माना जाता है। गरीब रहना देश के लिए गौरव की बात नहीं है। इन दोनों तरह के विकास के साथ नैतिक व आध्यात्मिक विकास भी अपेक्षित है। भारत ऋषि-मुनियों की धरती है। ऋषि-मुनियों ने यहां तप तपा, साधना की, सबको ज्ञान दिया। इस आधार पर भारत वस्तुतः संतों की भूमि है।'

किशोरों का आह्वान करते हुए आचार्यवर ने कहा--'किशोर जैन विद्या का अध्ययन करें। कुछ ऐसे किशोर भी सामने आएं, जो साधु बनकर आत्मकल्याण कर सकें और अपनी योग्यता से संघ की सेवा कर सकें। स्वस्थ व सुदृढ़ भारत हेतु तेजस्वी साधुओं का होना भी आवश्यक है। हमारे संघ में कितने किशोरों ने दीक्षा ली, अपना विकास किया और काम किया। कम्प्यूटर के पास रहने वाले, टीवी. के इर्द-गिर्द मंडराने वाले और जेब में मोबाइल फोन रखने वाले इन किशोरों में प्रतिभा व पराक्रम की क्षमता प्रतीत हो रही है। पराक्रम सही दिशा में नियोजित करें, अपनी शक्ति को पहचानें तथा शक्ति रचनात्मक व निर्माणात्मक एवं पवित्र कार्यों में लगे तो स्वस्थ भारत : सुदृढ़ भारत का स्वप्न साकार हो सकता है।' कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया।

कार्यक्रम के बाद जोधाणा सीनियर सिटिजन संस्था के चालीस सदस्यों ने पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में पहुंच कर मार्गदर्शन प्राप्त किया। अध्यक्ष श्री रामराज भंडारी ने आभार ज्ञापित किया।

iHkkoh lkotfud iopu

आज रात्रि में 'जीने की कला' विषय पर परमाराध्य आचार्यप्रवर का बड़ा ही उत्प्रेरक एवं सारगर्भित प्रवचन हुआ। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम होने से प्रवचन पण्डाल खचाखच भरा था। जैन समाज के अतिरिक्त विभिन्न वर्गों के लोगों ने बड़ी संख्या में उपस्थित होकर ज्ञानसुधा का पान किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने प्रभावी उद्‌बोधन में जीवन की अध्रुवता का विशद विवेचन करते हुए कहा--'शरीर व आत्मा का योग ही जीवन है। जहां मात्र शरीर है, वहां जीवन नहीं होता। शरीर से आत्मा का अलग होना मृत्यु है। यह कुछ समय के लिए होता है, फिर आत्मा नये शरीर को धारण कर लेती है। हमेशा के लिए शरीर से आत्मा का अलग होना और फिर शरीर का प्राप्त न होना मोक्ष है।' आस्तिक व नास्तिक विचारधारा के मंतव्यों को व्याख्यायित करते हुए आचार्यवर ने जीवन जीने के उद्‌देश्यों की चर्चा करते हुए कहा--'पूर्वार्जित कर्म संस्कारों को समाप्त करने के लिए इस शरीर के द्वारा धर्म किया जाता है।'

जीने की कला के सूत्रों के माध्यम से प्रेरणा प्रदान करते हुए आचार्यवर ने कहा--'व्यक्ति के मन में ईमानदारी के प्रति आस्था होनी चाहिए। अहिंसा के प्रति आस्था पुष्ट रहनी चाहिए। संयम की चेतना प्रखर बने, धर्म की साधना हेतु समय का प्रबंधन हो। जीवन में सद्‌गुण आ जाते हैं तो जीवन धन्य बन जाता है।'

कार्यक्रम में प्रो. प्रद्युम्न शाह ने अपनी विचार प्रस्तुति के साथ आचार्य महाप्रज्ञ एवं डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की संयुक्त कृति 'सुखी परिवार खुशहाल देश' के पंजाबी भाषा में अनूदित संस्करण का परिचय

दिया और श्री पुरुषोत्तम जैन (मंडी गोविन्दगढ़) के साथ कृति पूज्यवर को भेंट की।

आचार्यप्रवर ने पंजाबी भाषी लोगों के लिए इसे उपयोगी बताते हुए कहा--'परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी अपनी पंजाब यात्रा के दौरान पटियाला की पंजाबी यूनिवर्सिटी में पधारे थे। वह दुनिया में महापुरुषों की वाणी को प्रसाारित करती रहे।

lkèoh y{ehorhth ¼ljnkj'kgj½ iyc vu'kuiod lekfèkej.k dk ikIr

बीदासर समाधिकेन्द्र में स्थित लंबे समय से अनशनरत साध्वी लक्ष्मीवतीजी १४ मई २०१२ को प्रातः लगभग ११ बजे समाधिमरण को संप्राप्त हो गई। उनके विषय में उद्‌गार व्यक्त करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कहा--'साध्वी लक्ष्मीवतीजी सरदारशहर के जम्मड़ परिवार से संबद्ध थीं। नौ वर्ष की अल्पायु में सरदारशहर के गोठी परिवार में उनका विवाह कर दिया गया। उन्हें लगभग तेईस वर्ष की युवावस्था में परमपूज्य गुरुदेव तुलसी से संयम ग्रहण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। दीक्षा के बाद उन्हें साध्वी पानकुमारीजी (सर.) के साथ रखा गया। उनकी बड़ी दीक्षा साध्वी पानकुमारजी (सर.) के हाथों से ही हुई। उनके स्वर्गवास के पश्चात् वे गत पन्द्रह वर्षों से बीदासर समाधिकेन्द्र में स्थिरवास कर रही थीं। साध्वी भूरांजी एवं साध्वी स्वयंप्रभाजी उनके संसारपक्षीय परिवार से संबद्ध थीं। गत चैत्र शुक्ला पंचमी (द्वितीय) तदनुसार २८ मार्च २०१२ को समाधिकेन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी विशदप्रज्ञाजी ने उन्हें इक्कीस दिन की संलेखना में तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान करवाया। स्वर्गवास से एक दिन पूर्व उन्होंने चौविहार अनशन स्वीकार किया। इस प्रकार वि. सं.२०६९ के ज्येष्ठ कृष्णा नवमी के दिन इक्कीस दिन की संलेखना सहित अड़सठ दिन के तिविहार अनशन तथा अठारह घंटा चौबीस मिनट के चौविहार अनशन में वे समाधिमरण को प्राप्त हो गई। इतना प्रलम्ब अनशन अपने आप में विशिष्ट बात है। दिवंगत आत्मा के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना।

साध्वीजी के प्रलम्ब अनशन में समाधिकेन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी विशदप्रज्ञाजी आदि साध्वियों का अच्छा सहकार रहा। बीदासर के श्रावक समाज ने जागरूकतापूर्वक अपने दायित्व का निर्वहन किया।

eèkkoh Nk=k ikRlkgu ifj;ktuk % ,d vujkèk

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा मेधावी छात्र-छात्राओं के प्रोत्साहन, सम्मान और सहयोग के उद्‌देश्य से मेधावी छात्र प्रोत्साहन परियोजना का संचालन किया जाता है। महासभा द्वारा इस परियोजना के अंतर्गत दसवीं और बारहवीं में ८५ प्रतिशत अंक अथवा उसके समकक्ष ग्रेड तथा उससे अधिक अंक अथवा ग्रेड प्राप्त करने वाले तेरापंथी छात्र-छात्राओं से इस परियोजना में पंजीकरण कराने हेतु अनुरोध किया गया है। सन् २००६ से अब तक उपर्युक्त अंक प्राप्त करने वाले अपंजीकृत मेधावी अपनी अंकतालिका की प्रति के साथ अपना आवेदन पत्र medhaviterapanth @ yahoo.com व medhavi terapanth @ gmail.com पर प्रेषित कर सकते हैं।

परमपूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में आगामी ११-१२ अगस्त को जसोल में इस परियोजना का सातवां मुख्य कार्यक्रम एवं सम्मान समारोह आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर चयनित छात्र-छात्राओं को स्वर्णपदक, रजतपदक व छात्रवृत्तियां प्रदान की जाएंगी। कार्यशाला के साथ आकर्षक पुरस्कार भी रखे गए हैं। यह जानकारी देते हुए सदस्य सचिव हरीश जैन ने मेधावी छात्र-छात्राओं से कार्यक्रम में भाग लेने का अनुरोध किया है। अधिक जानकारी के लिए मोबाइल नं. ९९९९९८१५२१ तथा (०११) ३०६०५५०० पर सम्पर्क किया जा सकता है।

vk;ktd è;ku n

किसी अधिवेशन, सम्मेलन, शिविर, कार्यशाला आदि में प्रायोजक रहते हैं तो बेनर, पोस्टर, कार्ड, किट

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

आदि में उनके नाम, व्यावसायिक प्रतिष्ठान के नाम तथा लोगो का उल्लेख न किया जाए। प्रातःकालीन व्याख्यान कार्यक्रम के अतिरिक्त किसी अन्य सत्र में उनका सम्मान तथा प्रतिवेदन आदि में नामोल्लेख करने में आपत्ति नहीं। स्वयं अनुदानदाता दान के साथ होने वाली नाम-ख्याति की भावना का परित्याग करे तो वह उसकी आत्मा के लिए कल्याणकारी होगा।

vkn'k lkfgR; l?k dk HkV

५१००/- श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व.श्रीमती रायकंवरीदेवी मालू (धर्मपत्नी-स्व.मोहनलालजी मालू, छापर-दिल्ली) की पुण्यस्मृति में विजयसिंह, बाबूलाल, रतनलाल, नरपत मालू एवं सुपौत्र धनपत, लक्ष्मीपत, राजेश, योगेश, अभिषेक, विकास, आकाश मालू द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व.श्रीमती पानीदेवी कंकुचोपड़ा (धर्मपत्नी-श्री ऋषभचन्दजी कंकुचोपड़ा, कनाना-इचलकरंजी) के प्रभावक संथारे के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पूत्रवधू अशोककुमार-ललितादेवी, हितेन्द्रकुमार-इन्द्रादेवी, सुपौत्र निखिल, सुपौत्री सृष्टि, श्रुति, श्रेया कंकुचोपड़ा परिवार द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व.श्रीमती पुष्पादेवी (धर्मपत्नी-श्री दीपचन्दजी सेमलानी, रानीस्टेशन) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र व पूत्रवधू जितेन्द्र-पूनम सेमलानी द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रीमती गुलाबदेवी बोथरा (धर्मपत्नी-स्व. नवरतनमलजी बोथरा, श्रीडूंगरगढ़) के वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पूत्रवधू किशोर-बबिता, दीपक-अंजु, सुपौत्र प्रीत, संयम, सुपौत्री प्राची, तन्वी बोथरा, श्रीडूंगरगढ़-सूरत द्वारा प्रदत्त।

२१००/- चि. विक्रमकुमार (सुपौत्र-श्री कन्हैयालालजी, सुपुत्र हंसमुखलाल भुगलिया, मोखुन्दा) के मुंडन संस्कार के उपलक्ष्य में उनकी दादी श्रीमती पुष्पादेवी, माता श्रीमती विमलादेवी, विनोदकुमार, छीतरमल सोनूदेवी, तनीशा, वंशिका भुगलिया, मोखुन्दा (राज.) द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री छतर गोलछा (सुपुत्र स्व.बच्छराजजी गोलछा) एवं श्रीमती अंजु गोलछा (सुपुत्री-श्री विजयसिंह सिपाणी) के दाम्पत्य जीवन की २५वीं वर्षगांठ (रजतजयंती) के उपलक्ष्य में गोलछा परिवार (सरदारशहर-गुलाबबाग) एवं सिपानी परिवार (नोहर-रायपुर) द्वारा प्रदत्त।

- परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ६-२७ जून तक पचपदरा में प्रवास करेंगे। दर्शन-उपासना हेतु बाहर से आने वाले श्रद्धालु निकटवर्ती रेलवे स्टेशन बालोतरा पहुंचें। वहां से पचपदरा मात्र ११ किमी. दूर है और हर तरह के साधन वहां से सुलभ हैं।

आदर्श साहित्य संघ का शिविर कार्यालय अहर्निश पूज्यप्रवर की सेवा में है, किन्तु पत्र व्यवहार के लिए अब हमारा आगे का पता है--

d'koilkn pronh] icUèkd&vkn'k lkfgR; l?k] }kjk&vkpk; egkJe.k iokl 0;oLFkk lfefr]
ik- tlky&…††,„† ft- ckMej ¼jktLFkku½ Qku % ‹^Š,,‡‡…Šƒ] ‹…‡„†,†^†ƒ

दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

idk'ku fnukd % „^&‡&„,ƒ„

•

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **d'koilkn pronhA**